



Original Article

भ्रष्टाचार-प्रतिरोधक जन-आक्रोश का सशक्त नाट्य-विमर्श : ‘उजली नगरी-चतुर राजा’

डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे (महाराष्ट्र, भारत)

Manuscript ID:

IJAAR-C130301

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 1- 5

Submitted: 15 Jan.2026

Revised: 20 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774410

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774410>



Creative Commons



सार:

मन्नु भंडारी लिखित ‘उजली नगरी चतुर राजा’ नाटक में सत्ता की लालसा के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक आयामों को परिलक्षित किया गया है। सत्ता हाँसिल करने के लिए चुनाव लड़ना, चुनाव में वोट प्राप्त करने के लिए नोट बाँटना और जनता को उल्लू बनाते हुए चुनाव जीतना, चुनाव जीतने के बाद जो पैसे चुनाव पर खर्च किए थे वे वसूल करना और जनता की लूट करके अपनी जेबें भर लेना ये सारी बातें सत्ताधारी करते रहते हैं। जब जनता की समझ में ये सारी बातें आ जाती हैं, तब जनता सत्ताधारियों के भ्रष्टाचार का विरोध करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में ‘उजली नगरी चतुर राजा’ नाटक के सत्ताधारियों द्वारा उत्पन्न आर्थिक समस्याओं का जिक्र किया गया है। भ्रष्टाचार और रिश्तखोरी के तहत ये सत्ताधारी जनता की लूट करते रहते हैं। इसी का पर्दाफाश करना प्रस्तुत रचना का उद्देश्य है। यह रचना समसामयिक राजनीति का प्रतिबिंब है।

मुख्य शब्द: ‘उजली नगरी-चतुर राजा’, मन्नु भंडारी, भ्रष्टाचार-प्रतिरोध, जन-आक्रोश, भूमंडलीकरण, नाट्य-विमर्श।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे. (2026). भ्रष्टाचार-प्रतिरोधक जन-आक्रोश का सशक्त नाट्य-विमर्श : ‘उजली नगरी-चतुर राजा’. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 1–5. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774410>

प्रस्तावना (Introduction):

मन्नु भंडारी लिखित ‘उजली नगरी चतुर राजा’ सन 2015 इस्वी.में प्रकाशित हुआ है। नाटक का आरंभ चुनाव के आयोजन से होता है। नाटक का यह शीर्षक भारतेन्दु हरिश्चंद्र

के ‘अंधेर नगरी चौपट राजा’ की ओर संकेत करता है। किताब की फ्लैप समीक्षा में लिखा गया है कि इस नाटक का शीर्षक भारतेन्दु हरिश्चंद्र कृत ‘अंधेर नगरी चौपट राजा’ पर एक रचनात्मक टिप्पणी है। उजास व चतुराई जैसे शब्दों का एक



भिन्न अर्थ मन्नु भंडारी ने रेखांकित किया है। व्यंजना यह है कि आज अनेक सकारात्मक शब्दों, प्रतीकों और धारणाओं को निहित स्वार्थ ने भ्रष्ट कर दिया है। सत्ता की राजनीति से उत्पन्न जनसाधारण की आर्थिक समस्या एवं उसके क्रांतिकारी समाधान का चित्रण प्रस्तुत नाट्य-विमर्श की खासीयत है।

उद्देश्य (Objectives) :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के उद्देश्य निम्नांकित हैं:

1. 'उजली नगरी चतुर राजा' नाटक के पात्रों एवं कथानक के माध्यम से सत्ता और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्ट प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
2. भ्रष्टाचार के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. नाटक में प्रयुक्त व्यंग्य एवं प्रतीकात्मकता के माध्यम से भ्रष्ट व्यवस्था की आलोचना का अनुशीलन करना।
4. भ्रष्टाचार-प्रतिरोधक जन-आक्रोश के रूप में 'उजली नगरी चतुर राजा' नाटक की प्रासंगिकता रेखांकित करना।

विचार-विमर्श (Discussion):

मन्नु भंडारी लिखित 'उजली नगरी-चतुर राजा' नाटक में सत्ताधारियों की सत्ता-ललक से उत्पन्न निम्नलिखित आर्थिक समस्याओं का जिक्र किया गया है जिससे भ्रष्टाचार-प्रतिरोधक जन-आक्रोश उद्बलित हुआ है:

1. भ्रष्टाचार: चुनाव से पूर्व: 'उजली नगरी चतुर राजा' नाटक के आरंभिक दृश्य में विविध राजनीतिक पार्टियाँ जनता को अपनी-अपनी ओर से आश्वासन दे रही हैं। लेखिका ने पार्टियों के नाम भी पशु-प्रतीक रखे हैं। जैसे-उल्लू पार्टी, चूहा पार्टी, बंदर पार्टी। ये तीनों पशु-प्रतीक अच्छे अर्थों में नहीं

हैं। उल्लू पार्टी के लोग कहते हैं कि गरीबों का दुःख ही हमारा दुःख है और ये दुःख हमें दूर करना है। इसलिए हम चुनाव लड़ रहे हैं। शुरू से ही हमें गरीबों के प्रति आस्था है और इसलिए अमीर-गरीब का भेद मिटाकर समरसता लाने के लिए हम चुनाव लड़ रहे हैं, इसलिए उल्लू को वोट दो, उल्लू को वोट दो। बंदर पार्टी के लोग कहते हैं बंदर को वोट दो। चूहा पार्टी कहती है कि हम जनता के गम का जाल कुतर-कुतरकर समाप्त कर देंगे। फिर सुख और सेहत की वर्षा होगी। इसलिए चूहे को वोट दो। आखिर में उल्लू पार्टी जीत जाती है। चुनाव जीतने के बाद उल्लू पार्टी के लोग एक साथ बैठकर बात कर रहे हैं। सत्ता का केंद्र राजा है। बड़ा मंत्री राजा का बड़ा बेटा है। छोटा मंत्री राजा का छोटा बेटा है। सारी सत्ता एक ही परिवार ने बटोरी हुई है। यहाँ राजा का होना भी प्रतीकात्मक है। चुनाव जनतंत्र की खासीयत है और राजा राजतंत्र की। बावजूद इसके लेखिका ने राजा को लोकतंत्र में स्थापित करके तानाशाही पर व्यंग्य किया है।

बड़ा मंत्री, जो राजा का ही बड़ा बेटा है, कहता है कि चुनाव की भूमिका तैयार करने के लिए दस महीने पहले गरीबों की आठ सौ झोंपड़ियों को पक्का करवा कर मकान नहीं बनवाए उनके लिए। हिसाब खजांची को दे दिया था। मकान बना दिये... लोगों को वहाँ बसा भी दिया, पर लिखा-पढ़ी कुछ की ही नहीं। वो खुश कि मकानों में रह रहे हैं और हम खुश कि वोट भी झटक लिए और मकान तो हमारे के हमारे ही रहे। जब चाहें उन्हें निकाल बाहर करें। इस बात पर राजा खुश होता है। पिछले तीन महीनों में गैस के पाँच सौ चूल्हे गरीबों में बाँटे, गाँवों में छह सौ हैंड-पम्प लगवाए। चुनाव के चार दिन पहले चुपचाप घर-घर जाकर लोगों को नोटों के बंडल थमाए और उनके वोट अपनी झोली में डलवाए। बंदर पार्टी के दो और चूहा पार्टी के तीन लोग फोड़ लिए। वे लोग अपने-अपने बैनर तले ही रहे, पर हमारी पार्टी के लिए ही काम किया। ऐसा पुख्ता काम कि



हमारी जीत पक्की कर दी। परंतु इन्होंने हमसे रकम भी तगड़ी झटकी। राजा कहता है कि अब उनको मंत्री-वंत्री का पद हम दे देंगे।

2. भ्रष्टाचार: चुनाव के उपरांत: चुनाव के उपरांत खजाना भरने के उपाय बताए जाते हैं। पहला उपाय यह है कि सबसे पहले तो पुलिस की संख्या बढ़ाओ। इसके अनुसार पुलिस में भर्ती होने के लिए नवयुवक आता है। तब राजा के मंत्री द्वारा उसे शारीरिक तंदुरुस्ती के अलावा दूसरी परीक्षा देने के लिए कहा जाता है। उससे कहा जाता है कि दूसरी परीक्षा मतलब कुछ खास नहीं, सिर्फ राजा के खजाने में पाँच लाख रुपए जमा करने होंगे। तब वह आदमी आश्चर्य से कहता है कि इतने रुपए मेरे पास होते तो इस मामूली-सी नौकरी के लिए आता ही क्यों महाराज ? वह आगे यह भी पूछता है कि पैसे देते समय पकड़े गए तो? तब मंत्री उसे बताता है, “अजब मूर्ख हो ! पकड़ने का काम तो पुलिस का। पुलिस ही तो पकड़ती है चोर-उचक्कों को... बदमाश-बेईमानों को। पुलिस को भला कौन पकड़ सकता है? बस, हम पकड़ सकते हैं। पर हम क्यों पकड़ेंगे अपनी पुलिस को? राजा की, राज-परिवार की, मन्त्रियों- सन्तरियों की देखभाल करने के लिए ही तो रखा जाता है तुम्हें। बस, तुम तन-मन से करते जाओ हमारी सेवा। फिर चलो तुम चाहे कैसी भी चाला कर न सकेगा कोई भी तुम्हारा बांका बाला।” (50)

चुनाव जीतकर सत्ता हाँसिल करने के बाद राजा के लोगों द्वारा बिजली के दाम बढ़ाए जाते हैं। राजा का खजाना भरने के बाद तुरंत उन लोगों को राजा द्वारा बिजली के दाम बढ़ाने की अनुमति मिलती है। बिजली के दाम बढ़ाने का अंजाम जनसाधारण को भुगतना पड़ता है। एक गरीब मजदूर फरियाद लेकर आता है। वह कहता है, “सोई तो बता रहा हूँ महाराज। बहुत जली तो बिजली दो घंटे जली। सौ रुपए से ज्यादा बिल तो मैंने कभी दिया ही नहीं, पर इस बार बिल आ

गया पूरे दो हजार रुपए का। (माथा ठोककर) इत्ते रुपए अब कहाँ से लाऊँ मैं? भागा-भागा बिजली दफ्तर गया तो वे कान पकड़ कर मुझे मेरे घर ले आए और (मीटर दिखाते हुए) इसे दिखाते हुए बोले...देख इसे, इसमें लिखा है तभी तो बिल बनाया है और दो झापड़ मारकर बोले, जमा कर देना, नहीं तो बिजली काट देंगे और चले गए। मैंने खूब आँख गड़ा-गड़ा कर देखा इसमें महाराज पर मुझे तो कुछ दिखा ही नहीं।” (55)

3. भ्रष्टाचार एवं रिश्तखोरी के विरुद्ध जन-आक्रोश: इन सारे अत्याचारों के विरुद्ध जनता आंदोलन करती है। तब नगर मंत्री राजा को असलीयत बताते हुए कहता है कि समय बदल रहा है महाराज। अब उन्हें आपके दर्शन नहीं, अपने दुखों का हल चाहिए। तब राजा कहता है कि प्रजा की रक्षा के लिए कितने तो हमने थाने खुलवाये। नगर मंत्री बताता है कि थाने तो खुलवाए पर कभी जानने की कोशिश की है कि वहाँ असल में क्या होता है? कैसी सुरक्षा और किसकी सुरक्षा? लोगों की रपट तक तो लिखी नहीं जाती, उल्टे उनसे पैसा वसूला जाता है। दुखी, परेशान लोगों को और अधिक दुखी किया जाता है। तब राजा कहता है कि अभी पुलिस वाले अपना कर्ज चुकाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। कर्ज चुक जाएगा तो चाल बदल जाएगी उनकी। नगर मंत्री बताता है कि एक बार रिश्त का जो चस्का लग गया तो फिर उनकी चाल नहीं बदलेगी। जनता का दुख अब गुस्से में बदल रहा है। यह बात आप तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। जनता की परेशानियाँ नफरत में बदल रही हैं। ढेर-ढेर लोग झुंड बना कर अब अपने गुस्से और नफरत की बातें ही करते हैं। ये लक्षण अच्छे नहीं हैं राज के लिए। इस पर राजा कहता है कि तुम इतने डरपोक कब से हो गए? ऐसे झुंड तो बनते ही रहते हैं, बिखरते ही रहते हैं... कभी कोई कुछ कर सका क्या हमारा? तुम डरो नहीं, बल्कि इनको डराओ। हमारे गुस्से का भय दिखाओ और सब तरफ हमारे कामों के गुण



गाओ। नगर मंत्री कहता है कि सत्ताधारी न कुछ देखना चाहते हैं, न समझना चाहते हैं। अब होने दो जो होता है। प्रस्तुत नाटक के राजा की तुलना ज्ञानदेव अग्निहोत्री के 'शुतुरमुर्ग' नाटक के राजा से की जा सकती है।

निम्नलिखित संवाद द्रष्टव्य है:

“नगर मंत्री: जिस हिम्मती लाल के भ्रष्टाचार के सबूत प्रमाणों के साथ उसने आपको लाकर दिए, आपने उसी को पुलिस का बड़ा कप्तान बना दिया?

राजा: उसने सबूत दिए और हम मान लें... ऐसे मूर्ख नहीं हम।

नगर मंत्री: पर लोग मान रहे हैं। नगर के दुखी, परेशान लोग उसके साथ जुड़ते जा रहे हैं और भीड़ है कि बढ़ती ही जा रही है।

राजा: बढ़ने दो। ये दुखी, गरीब लोग जुड़कर भी क्या कर लेंगे हमारा ?

नगर मंत्री: क्या कर लेंगे... तो याद दिला दूँ कि ये ही हैं वे लोग, जिन्होंने आपको इस गद्दी पर बिठाया। महलों की इन दीवारों में रहकर आप तो भूल ही गए इन झोपड़ियों में रहने वालों की बात, पर यह मत भूलिये कि जो गद्दी पर बिठा सकता है, वही चाहे तो... नहीं करूँगा मैं पूरी बात। बस इतना जान लीजिए कि कोई संकट आने वाला है। सूचना देना मेरा काम था, मैंने दे दी।

राजा: हमने सुन ली। अब जाओ और खबरें लाओ और जो हमने कहा वही करते जाओ।

नगर मंत्री: गुस्से से निकलता है और मंच के अन्तिम छोर पर पहुँच कर दर्शकों को सम्बोधित करते हुए) अब कर न सकूँगा मैं तो इनका कोई भी काम। मेरा तो हर क्षण अर्पित होगा अब खोजी ही के नाम। (प्रस्थान)

राजा : (खजांची से) तो अब हिसाब हो जाए साल भर का। (खजांची बही खाते खोलता है) वह जो तीन कम्पनियों से पैसा मिला था, वह तो जोड़ दिया न? तगड़ी रकम थी।

खजांची : वह तो कभी की जोड़ दी महाराज। उन कम्पनियों ने तो जमीन हथियाना- खोदना भी शुरू कर दिया।

राजा: अच्छा ! अब देखना कितना पैसा उगलेंगी ये कम्पनियाँ। ये उगलेंगी तो उसमें से कुछ हम भी निगलेंगे ही। हाथ हमेशा ऐसी ही कम्पनियों से मिलाना चाहिए। वे खाएँ, हम पचाएँ। (78-79)

इस राजा की कथा सुनने वाले लोग उल्लू पार्टी के राजा का धिक्कार करते हैं और कहते हैं कि इसे राजगद्दी से उतारिए। बंदर या चूहा पार्टी का राजा क्यों नहीं बनाया गया ? तब कथा बताने वाले स्वामी कहते हैं, “शान्त रहिये... शान्त रहियो। बैठिए और ध्यान से सुनिए मेरी बात। ये पार्टी का तो खेल ही नहीं... ये सब खेल तो है सत्ता का... सिंहासन का। जो भी इस सिंहासन पर बैठा, समझो मति हुई उसकी भ्रष्ट। फिर उसका दिल दिमाग उसका नहीं, सिंहासन का हो जाता। सिंहासन उसे जो दिखलाएगा, वहीं वो देखेगा... सिंहासन जो करवाएगा, वही वह करेगा। यों समझो कि फिर आदमी, आदमी नहीं, सिंहासन ही बन जाएगा। और सिंहासन तो न कुछ देखे, न सुने... न सोचे, न धड़के। न जिसके कोई नीति-नियम... न आचार-विचार। वह तो बस एक बात ही जाने कि सिंहासन हथियाने के लिए जो चाहे करो... बिना झिझक के उल्टे-सीधे सब हथकंडे अपनाओ। सही -गलत की बात झटक दो। जैसे भी हो सिंहासन पाओ। और अगर एक बार बैठ गए सिंहासन पर तो फिर जोड़- तोड़ साँठ- गाँठ कर उम्र भर हमेशा बैठे रहने की जुगत भिडाओ।” (94-95)

प्रस्तुत नाटक अत्यंत प्रासंगिक है। करप्शन परसेप्शन इंडेक्स 2025 में भारत 182 देशों और क्षेत्रों में 91वें स्थान पर है। यह इंडेक्स अंतरराष्ट्रीय NGO ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने जारी किया है। (CPI, 2025) मन्नु जी ने 'नेपथ्य से' में लिखा है – “भ्रष्टाचार... हर दिन उजागर होते घपले-दर-घपले... महँगाई



की मार से निचुड़ता आम आदमी ! तो क्या व्यक्तिगत स्तर पर चलनेवाला यह विद्रोह केवल विद्रोही को ही कुचलता-मसलता है... बाहर कुछ भी बदलने में असमर्थ है? इस स्थिति से मन खिन्न तो हो आया पर शायद असलियत यही थी !

तभी एक दिन रामलीला मैदान में अन्ना हजारे भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए जनलोकपाल विधेयक की माँग को लेकर भूख हड़ताल पर बैठे तो उनकी प्रेरणा से जिस तरह शहर-दर- शहर से हर वर्ग के लोग उनके साथ जुड़ते चले गए वह सारा दृश्य चकित कर देनेवाला था। पहली बार ऐसा सामूहिक-विद्रोह देखने को मिला, जिसने एक बार तो सत्ता और सरकार को भी हिला ही दिया !”

निष्कर्ष:

प्रस्तुत नाटक में सत्ताकेंद्रित भ्रष्टाचार का गहरा और यथार्थ चित्रण किया गया है। नाटक केवल भ्रष्टाचार की

समस्या नहीं दिखाता, बल्कि जनता को भ्रष्टाचार के विरुद्ध सचेत भी करता है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सत्ता के यथार्थ का दर्पण होने के साथ-साथ परिवर्तन की ओर संकेत भी है। जनतंत्र में व्यंग्यात्मक रीति से राजा, बड़ा मंत्री (राजा का बड़ा बेटा), छोटा मंत्री(राजा का छोटा बेटा), नगर मंत्री(राजा का भतीजा) जैसे पात्र रखकर प्रस्तुत नाटक में तानाशाही, परिवारवाद और भ्रष्टाचार का विरोध किया गया है।

संदर्भ:

आधार ग्रंथ :

1. मन्नू भंडारी .उजली नगरी चतुर राजा.दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन,2013

वेब संदर्भ:

1. [Corruption Perceptions Index 2025 - Transparency.org](https://www.transparency.org/en/cpi)